"अणुव्रत आन्दोलन में मेरा सदा से विश्वास रहा है और देश में इसके बहुमुखी प्रसार की चर्चाएं चारों ओर से सुनता हूँ, तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होती है। इसकी सफलता का आधार यह मानता हूँ—आचार्य तुलसी के नेतृत्व में ६५० जीवन दानी साधु इसके पीछे लगे हैं। काम तभी होता है, जब लगन से काम करने वाले कार्यकर्ता उसमें जुटें। दूसरी बात यह है—साधु-सन्तों के उपदेशों का ही असर धर्म प्रधान भारतवर्ष के जन-जीवन पर पड़ता है।

मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता तो इस बात से है कि देश में इस आन्दोलन ने सार्वजनिक रूप ले लिया है। मैं समझता हूँ कि अब लोगों में ये भावनाएं नहीं रह गई हैं कि यह कोई साम्प्रदायिक आन्दोलन है। इस आन्दोलन का एक सार्वजनिक रूप ही इसके सुनहरे भविष्य का सूचक है।

व्रत तो अच्छे हैं ही, किन्तु विचारों की शुद्धि अधिक व्यापक रूप ले सकती है। बुराइयों का उन्मूलन तभी होता है जब सारे वातावरण में नैतिकता के प्रति उत्साह भर जाता है।

—राजेन्द्रप्रसाद (राष्ट्रपति)

●

हम ऐसे युग में रह रहे हैं, जब हमारा जीवात्मा सोया हुआ है। आत्मबल का अकाल है और सुस्ती का राज है। हमारे युवक तेजी से भौतिकवाद की ओर झुकते चले जा रहे हैं। इस समय किसी भी ऐसे आन्दोलन का स्वागत हो सकता है जो आत्मचिन्तन की ओर ले जाने वाला हो। इस समय हमारे देश में अणुव्रत आन्दोलन ही एक ऐसा आन्दोलन है, जो इस कार्य को कर रहा है। यह काम ऐसा है कि इसको सब तरफ से बढ़ावा मिलना चाहिए।

—एस० राधाकृष्णन् (उपराष्ट्रपति)

अणुव्रत-आन्दोलन

प्रवर्तक

आचार्य श्री तुलसी

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति प्रकाशन

प्रकाशक —
अ० भा० अणुव्रत समिति
१५३२ चन्द्रावल रोड, सब्जी मंडी
दिल्ली

दशम् संस्करण १००००
१ फरवरी १९६१
मूल्य १२ नये पैसे

मुद्रक —
सत्य प्रिंटिंग प्रेस,
२, शिवनगर करोल बाग
दिल्ली—५

प्रकाशकीय

अणुव्रत आन्दोलन के सफल प्रयोग को चलते आज बारह वर्ष होने चले हैं। आन्दोलन ने राष्ट्र में एक अभिनव विचार-चेतना पैदा की है। भौतिकवाद के साधन संचार से धूमिल बने वातावरण में अध्यात्म जागृति की नव किरण का उन्मेष होने चला है। अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे शाश्वत आदर्शों का युग-व्यवहार्य प्रयोग इस आन्दोलन ने जन-जन के समक्ष रखा है। जैसा कि आन्दोलन का घोष है संयम और सच्चारित्र्य का जीवन ही वास्तविक जीवन है जिस ओर जन-जन को प्रेरित करने के लिए आन्दोलन प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी एवं उनके आज्ञानुवर्ती लगभग ६५० परिव्राजकगण सतत् प्रयत्नशील हैं।

बदलती हुई युगीन परिस्थितियों के साथ-साथ बुराइयों के रूप भी बदलते हैं। उन पर सीधी चोट की जा सके एतदर्थ अणुव्रत आन्दोलन के अन्तर्गत अहिंसा आदि चिरन्तन आदर्शों के आधार पर जो छोटे छोटे व्यवहार नियमों की संकलना की गई वस्तुतः उससे विपथगामी लोक-जीवन को सत्पथ की ओर उन्मुख व अग्रसर होने में एक पगडंडी जैसा सहारा मिला है। इस योजनाबद्ध महाभियान ने मानव में जो आत्म चेतना और नैतिक-शुद्धि की सद्बुद्धि पैदा की है भारत के आध्यात्मिक जागरण एवं नैतिक पुनरुत्थान के इतिहास में यह सदा स्वर्णाक्षरों में लिखी रहेगी। यह प्रथम काम हाथ में बड़ा उज्ज्वल भविष्य अपने गर्भ में लिए है जो किसी भी व्यक्ति के लिए ममत्व नहीं।

आन्दोलन के इस बारह वर्षीय प्रवास काल में आन्दोलनगत नियम परम्परा को लेकर आन्दोलन प्रवर्तक के समक्ष अनेक प्रकार के विचार प्राय विनिमय चला। अणुव्रत नियम व्यापक रूप से अधिकाधिक व्यवहार्य एवं जनसाधारण का मार्गदर्शन करने वाले बनें इस दृष्टि से समय-समय पर उनमें कुछ परिवर्तन भी होता रहा।

अब तक हुए समस्त परिवर्तन को लिए आन्दोलन के नियमों का संशोधित रूप यह है जिसे पुस्तक रूप में प्रकाशित करते हुए हमें प्रसन्नता है।

आशा है, नैतिक पुनरुत्थान में निष्ठा रखने वाले पाठक इससे नव जीवन की प्रेरणा लेंगे।

१५३२ चन्द्रावल रोड
सब्जीमंडी दिल्ली
दिनांक ३१ मार्च १९५८

मन्त्री
अ० भा० अणुव्रत समिति

जीवन की आध्यात्मिक व नैतिक सिंचाई के लिए अणुव्रत-आन्दोलन एक योजना है। इसका लक्ष्य सामाजिक व राजनैतिक उन्नति से बहुत अधिक व्यापक है। यह आध्यात्मिक उन्नति है। आध्यात्मिक उन्नति न केवल उच्चतम उन्नति है परन्तु सर्वतोमुखी उन्नति है। इसमें अपना निज का हित व दूसरा का हित भी सम्मिलित है।

—आचार्य तुलसी

अणुव्रत-प्रार्थना

(राग—उच्च हिमालय की चोटी से)

बड़े भाग्य हैं भगिनी बन्धुओ जीवन सफल बनाएं हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाएं हम॥
अपरिग्रह अस्तेय अहिंसा, सच्चे सुख के साधन हैं।
सुखी देख लो संत अकिंचन संयम ही जिनका धन हैं॥
उसी दिशा में, दृढ़ निष्ठा से, क्यों नहीं कदम बढ़ाएं हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाएं हम॥१॥
रहें यदि व्यापारी तो, प्रामाणिकता रख पाएंगे।
राज्य-कर्मचारी जो होंगे रिश्वत कभी न खाएंगे॥
दृढ़ आस्था आदर्श नागरिकता के नियम निभाएं हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पायें हम॥२॥
गृहणी हो गृहपति हो चाहे विद्यार्थी, अध्यापक हो।
वैद्य, वकील शील हो सर्वमं नैतिक निष्ठा व्यापक हो॥
धर्मशास्त्र के धार्मिकपन को, आचरणा में लाएं हम।
आत्म साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पायें हम॥३॥
अच्छा हो अपने नियमों से हम अपना संकोच करें।
नहीं दूसरे वध बन्धन से, मानवता की शान हरें॥
यह विवेक मानव का निज गुण, इसका गौरव गाएं हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में अणुव्रती बन पायें हम॥४॥
आत्म शुद्धि के आन्दोलन में तन मन अर्पण कर देंगे।
कड़ी जांच हो लिए व्रतों में आंच नहीं आने देंगे॥
भौतिकवादी प्रलोभनों में कभी न हृदय लुभाएं हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में अणुव्रती बन पायें हम॥५॥
सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से उसका असर राष्ट्र पर हो।
जाग उठे जन जन का मानस, ऐसी जागृति घर घर हो॥
'तुलसी' सत्य अहिंसा की जय विजय ध्वजा फहराएं हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाएं हम॥६॥

शिक्षाए

जीवन की आध्यात्मिक व नैतिक सिंचाई के लिए अणुव्रत-आन्दोलन एक योजना है। इसका लक्ष्य सामाजिक व राजनैतिक उन्नति से कहीं अधिक व्यापक है। वह आध्यात्मिक उन्नति है। आध्यात्मिक उन्नति न केवल उच्चतम उन्नति है, परन्तु सर्वतोमुखी उन्नति है। इसमें अपना निज का हित व दूसरों का हित भी सम्मिलित है।

—आचार्य तुलसी

आन्दोलन का घोष

आचार और विचार ये जहां दो हैं वहां एक भी हैं। इनमें जहां पौर्वापर्य (पहले पीछे का भाव) है, वहां नहीं भी है। विचार के अनुरूप ही आचार बनता है अथवा विचार ही स्वयं आचार का रूप लेता है। आप्त-वाणी में मिलता है—'पहले विचार और पीछे आचार।' आचार शुद्ध नहीं तो विचार कैसे शुद्ध होगा? शुद्ध विचार के बिना आचार शुद्ध नहीं बनता। आचार विचार के अनुकूल चले तब उनमें द्वैध नहीं रहता। विचार जैसा आचार नहीं बनता, वहां वे दो बन जाते हैं। अपेक्षा है विचार और आचार में सामंजस्य आये।

कई व्यक्ति ऐसे हैं जिनमें विचारों की स्फुरणा नहीं है, उन्हें जगाने की आवश्यकता है। कई व्यक्ति जाग्रत हैं किन्तु उनकी गति संयम की दिशा में नहीं है उनकी गति बदलने की आवश्यकता है। कई व्यक्ति सही दिशा में हैं किन्तु उनके विचार केवल विचार तक ही सीमित हैं उन्हें साधना करने की आवश्यकता है।

मूल बात है—आचार शुद्धि की आवश्यकता। इसके लिए विचार क्रांति चाहिए। उसके लिए सही दिशा में गति और इसके लिए जागरण अपेक्षित है।

राजनीति की धारा परिस्थिति को बदलना चाहती है और वह उसको बदल सकती है। अणुव्रत का मार्ग संयम का मार्ग है। इसके द्वारा हमें व्यक्ति को बदलना है। परिस्थिति बदले, इसमें हमारा विरोध नहीं किन्तु उसके बदलने पर भी व्यक्ति न बदले अथवा दूसरे पथ की ओर मुड़ जाय, यह वाञ्छनीय नहीं। सामग्री के अभाव में जो कराहता रहे, वही उसे पाकर विलासी बन जाये, यह उचित नहीं। संयम की साधना नहीं होगी तब यह होता है। संयम का लगाव न गरीबी से है न अमीरी से। इच्छाओं पर विजय हो—यही उसका स्वरूप है। इच्छाएँ सम्भव हैं एक साथ नष्ट भी न हों, किन्तु उन पर अंकुश तो रहना ही चाहिए। शक्तिशाली और पूँजीपति वर्ग को इच्छाओं पर नियन्त्रण करना है और अधिक संग्रह को भी त्यागना है। गरीबों के लिए अधिक संग्रह के त्याग की बात नहीं आती, किन्तु इच्छाओं पर नियन्त्रण करने की बात उनके लिए भी वैसी ही महत्त्वपूर्ण है जैसी धनी वर्ग के लिए है।

बड़े या उच्च कहलानेवाले वर्ग के लिए यह चुनौती है कि वह सन्तोषी बने। निम्न वर्ग स्वयं उनके पीछे चलेगा। ऐसा नहीं होता है तब तक देखा देखी या स्पर्धा मिटती नहीं।

विश्व की जटिल परिस्थितियों, मानसिक और शारीरिक वेदनाओं को पाते हुए भी क्या मनुष्य समाज नहीं चेतेगा? जीवन की नश्वरता और सुख सुविधाओं की अस्थिरता को समझते हुए भी क्या वह नहीं सोचेगा?

जीवन की दिशा बदलने के लिए हम सबका एक घोष होना चाहिए—'संयमः खलु जीवनम्'। अणुव्रत आन्दोलन का यही घोष है। जीवन के क्षण-क्षण में शान्ति आये, उसके लिए यह नितान्त आवश्यक है।

आचार्य तुलसी

अणुव्रत की परिभाषा

अणुव्रत का अर्थ है—प्रत्येक व्रत का अणु से लेकर सब व्रतो का क्रमशः बढ़ता हुआ पालन। उदाहरण के लिए कोई आदमी जो अहिंसा और अपरिग्रह में विश्वास तो रखता है, लेकिन उनके अनुसार चलने की ताकत अपने में नहीं पाता, इस पद्धति का आश्रय लेकर किसी विशेष हिंसा से दूर रहने या एक हद के बाहर और किसी खास ढंग से संग्रह न करने का संकल्प करेगा और धीरे धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेगा। ऐसे व्रत अणुव्रत कहलाते हैं।

—किशोरलाल घ० मशरूवाला

आदि-वचन

पवित्रता की पहली मंजिल

मनुष्य बुद्धि कुशल प्राणी है। उसकी क्रिया पहले बौद्धिक होती है फिर दैहिक। इसलिए उसकी सारी क्रियाएं बुद्धि की उपज होती हैं, फिर चाहे समस्याएं हों या समाधान। समस्याएं स्वतन्त्रता में निर्मित होती हैं समाधान उनसे उबकर ढूंढना पडता है—वह परवशता है। जीभ पर नियन्त्रण न हो तो अधिक खाने में आ जाता है। इससे और समस्या खडी होती है। आदमी रोगी बन जाता है। रोग कष्ट देता है, तो उसके समाधान की बात सूझती है। दवा ली जाती है, रोग चला जाता है। फिर वही क्रम। पेट के लिए नहीं किन्तु जीभ के लिए खाना है। फिर समस्या खडी होती है समाधान चाहता है। समाधान इसलिए नहीं कि जीभ पर नियन्त्रण रहे किन्तु इसलिए कि जीभ का स्वाद भी मिलता रहे और रोगी होने से भी बचा जाय। यह है आदत की लाचारी और औषधि के साथ खिलवाड।

धर्म तो सहज होता है। वह मनुष्य की बुद्धि की उपज नहीं है। बुद्धि की उपज है, उसका उपयोग। उपयोग में बचाव

चलती है। बुराई करने पर मानसिक असंतोष बढ़ता है और समाधान के लिए धर्म की शरण ली जाती है, परमात्मा की प्रार्थना की जाती है और इससे कुछ शान्ति मिलती है। फिर बुराई की ओर पांव बढ़ते हैं फिर अशान्ति और फिर धर्म की शरण ! धर्म की यह शरण पवित्र और शुद्ध बनने के लिए नहीं ली जाती किन्तु बुराई का फल—यहाँ या अगले जन्म में कभी और कहीं भी न मिले, इसलिए ली जाती है। तात्पर्य यह है कि बुरा बने रहने के लिए आदमी धर्म का कवच धारण करता है। यही है धर्म के साथ खिलवाड़ या आत्म-वंचना।

व्रत-ग्रहण से आत्म-वंचना मिटती है। उसकी मर्यादा यह है कि बुराई का दुष्फल टालने के लिए धर्म की शरण न लो, किन्तु उससे बचने के लिए लो। धर्म पवित्र आत्मा में ठहरता है (धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ) अणुव्रत आन्दोलन का उद्देश्य है—जीवन पवित्र बने। दैनिक व्यवहार में सचाई और प्रामाणिकता आये। धर्म की भूमिका विकसित हो।

धर्म का नवनीत

जैन, बौद्ध, वैदिक, इस्लाम, ईसाई आदि अनेक धर्म सम्प्रदाय हैं। ये धर्म नहीं हैं धर्म को समझने की विचार धाराएं हैं। धर्म के पीछे जैन या बौद्ध नाम की मुद्रा नहीं है। वह सबके लिए समान है। धर्म को समझाने वाले तीर्थङ्करों, आचार्यों और उपदेशकों के पीछे सम्प्रदाय या मत चलते हैं।

प्रत्यक व्यक्ति की विशुद्धि का नाम ही धम है। यह विशुद्धि साधना और तपस्या म प्राप्त होती है। अहिंसा धम है। उसे समझने की पद्धति भिन्न भिन्न हो सकती है। उसकी वास्तविकता भिन्न नहीं हो सकती। मन्थन की प्रक्रिया भिन्न होने पर भी नवनीत म कोई अन्तर नहीं होता—मात्रा थोडी-बहुत भले हो। अहिंसा सब धर्म मतों का नवनीत है। सत्य अचौय, ब्रह्मचय और अपरिग्रह इसीके रूपान्तर हैं। आहार सयम, सादगी आदि अहिंसा के ही चिह्न हैं। अणुव्रत आन्दोलन सवसाधारण के लिए सव-सम्मत नवनीत प्रस्तुत करता है, इसलिए कि मौलिक धम का आचरण बढे और धम के नाम पर चलने वाले साम्प्रदायिक आग्रह मिट जायें।

समन्वय और सहिष्णुता की दिशा

'दूसरो का अनिष्ट नही करू गा', इसम दूसरा का इष्ट स्वय सध जाता है। 'दूसरो का इष्ट करू गा' इसकी मर्यादाए बडी जटिल और विवादास्पद हैं। कोई बडे जीव-जन्तुओं के इष्ट-साधन के लिए छोटे जीव-जन्तुओं के अनिष्ट को क्षम्य मानता है, कोई मनुष्य के इष्ट-साधन के लिए छोटे-बडे सभी जीव जन्तुओं के अनिष्ट को क्षम्य मानता है। कोई बडे मनुष्यो के लिए छोटे मनुष्यो के अनिष्ट को क्षम्य मानता है। कोई किसी के लिए भी किसी के अनिष्ट को क्षम्य नही मानता। इस प्रकार अनेक मतवाद हैं। इन मत-वादो को मिटाना कठिन है। । लेकर लडना अधम है हिंसा है। इस परिस्थिति म सही

मार्ग यही है कि मौलिक तत्वों का समन्वय किया जाय, सामुदायिक रूप में आचरण किया जाय और विचार भेदों के स्थलों में सहिष्णुता बरती जाय। अणुव्रत आन्दोलन की एक प्रतिज्ञा है—'मैं सब धर्मों के प्रति तितिक्षा के भाव रखूंगा।

विधि निषेध

नियमों की रचना 'नहीं' के रूप में अधिक है, 'हां' में कम। विधायक क्रिया की मर्यादा नहीं हो सकती। वह देश, काल, परिस्थिति और व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर है। वह कहां, कब, क्या कितना करे—इसकी मर्यादा सर्वसाधारण रूप से नहीं हो सकती। निषेध की मर्यादा हो सकती है। व्यक्ति को स्वतन्त्र रहने का अधिकार है, किन्तु दूसरों की स्वतन्त्रता में वह बाधक न बने तब। सब लोग अपने आप पर नियन्त्रण नहीं करते, इसीलिए सामूहिक नियमों से जनता पर नियन्त्रण किया जाता है। आखिर नियमन का रूप अधिकांशतया निषेधात्मक होगा। जो स्वयं अपने पर अंकुश रख सकता है, उसे बाहरी नियमन की अपेक्षा नहीं रहती। फिर तो निरोधक शक्ति बढ़ती है, आत्म संयम बढ़ता है। कर्तव्य में पवित्रता अपने आप आ जाती है। अणुव्रत आन्दोलन की मुख्य अपेक्षा यह है कि व्यक्ति-व्यक्ति में अत्याचार से अपना बचाव करने की क्षमता उत्पन्न हो। फिर आचार तो उनकी अपनी मान्यता व विश्वास पर निर्भर होगा। चरित्र की न्यूनतम मर्यादाएं जैसे सबके लिए समान रूप से स्वीकार्य हो सकती हैं, वैसे आचार या कर्तव्य की पद्धति

नही हो सकती। उसके पीछे भिन्न भिन्न धर्म-सम्प्रदाय के दृष्टिकोण जुड जाते हैं।

असाम्प्रदायिक आन्दोलन

अणुव्रत आन्दोलन किसी का नही और सबका है, किसी एक सम्प्रदाय के लिए नही, सबके लिए है। इसका स्वरूप चारित्रिक है, इसलिए इसमे अधिकार और पद की व्यवस्था नही है। अधिकार की मर्यादा है, आत्मानुशासन और आत्म निरीक्षण, और पद है, 'अणुव्रती'—या व्रत ग्रहण करने से ही प्राप्त होता है।

चरित्र का आन्दोलन

यह आन्दोलन चरित्र का आन्दोलन है। आज विश्व को चरित्र की सबसे बडी आवश्यकता है। उसने सबसे अधिक किसी वस्तु को खोया है तो चरित्र को। विश्व की दुखद अवस्था का प्रधान कारण चरित्र-हीनता ही है। जीवन की आवश्यकताए पूरी नही होती तो जीवन जटिल बनता है। इसलिए अर्थनीति के सुधार की आवश्यकता महसूस होती है। वह कोई शाश्वत नही होती बदल सकता है और बदलती भी है। कई राष्ट्रो मे वह बदल चुकी है फिर भी वे अभय और अनातकित नही हैं। जीवन निर्वाह और विलास के साधन सुलभ होने पर भी वह शान्त नही हैं। इससे जान पडता है—शान्ति का मार्ग कुछ और है। वह यही है—चरित्र का विकास हो। बाहर की सब सुविधाए हैं पर अन्दर सन्तोष नही तो शान्ति

कहां ? बाहर की सुविधाएँ नहीं और अन्दर सन्तोष नहीं तो फिर अशांति का कहना ही क्या ? बाहरी सुविधाएं हों और अन्दर सन्ताप हो—ऐसी शांति की स्थिति में भी कोई विशेष बात नहीं। किन्तु बाहरी असुविधाओं के होते हुए भी अगर आन्तरिक सन्तोष हो, तो भी शान्ति प्राप्त की जा सकती है—व्रतों के ग्रहण में। यही व्रत का मर्म है।

सर्व-साधारण भूमिका

जीवन की न्यूनतम मर्यादा सबके लिए समान रूप से ग्राह्य होती है—फिर चाहे वे आत्मवादी हों या अनात्मवादी, धर्म की कठोर साधना में रस लेने वाले हों या न हों। अनात्मवादी पूर्ण अहिंसा में विश्वास भले ही न करें किन्तु हिंसा अच्छी है—ऐसा तो वे नहीं कहते। राजनीति या कूटनीति को अनिवार्य मानने वाले भी यह नहीं चाहते कि उनकी पत्नियां उनसे छलनापूर्ण व्यवहार करें। असत्य और अप्रामाणिक भी दूसरों से सचाई और प्रामाणिकता की आशा रखा करते हैं। स्थिति भलाई है, जिसकी साधना व्रत है। अणुव्रत आन्दोलन उसीकी भूमिका है।

अणुव्रत

अणुव्रत अर्थात् छोटे व्रत। व्रत छोटा या बड़ा नहीं होता, किन्तु उसका अखण्ड ग्रहण न हो, तब वह अणु या अपूर्ण होता है। 'अणुव्रत' जैन आचार का विशिष्ट शब्द है। पतंजलि भी,

देश काल की सीमा से मर्यादित अहिंसा आदि को व्रत और देश-काल की मर्यादा से मुक्त अहिंसा आदि को महाव्रत बताते हैं।

व्रत-ग्रहण का उद्देश्य

व्रतों के पीछे आत्म शुद्धि की भावना है। ऐहिक लाभ या व्यवस्था के लिए व्रतों का ग्रहण नहीं होना चाहिए। उनके ग्रहण से ऐहिक लाभ स्वयं सधता है। व्रतों के ग्रहण का उद्देश्य तो आत्म शोधन ही होना चाहिए। समाज की व्यवस्था ही अगर साध्य हो, तो वह राजकीय सत्ता से व्रतों की अपेक्षा अधिक सरलता पूर्वक हो सकती है। किन्तु व्रतों की भावना इससे बहुत आगे है। वह परमार्थ मूलक है। उससे स्वार्थ और परमार्थ स्वयं फलित होते हैं।

प्रारम्भ से अब तक

इस कार्यक्रम का प्रारम्भ छोटे रूप में हुआ था। यह इतना व्यापक रूप लेगा, इसकी कल्पना भी न थी। जाता न आवश्यक समझा—जन जनेतर सभी ने इसे अपनाया—यह प्रसन्नता की बात है। मेरी भावना साकार बनी। उसमें मेरे शिष्यों—साधु और श्रावकों का वांछित सहयोग रहा। उन्होंने नियम तथा अन्य आवश्यक विषय भी सुझाये। आलोचकों की आलोचनाओं से मैंने लाभ उठाया। ग्राह्य अंश लिया और उपेक्षणीय की उपेक्षा की। उचित सुझावों को स्वीकार करने के लिए आज भी मैं तैयार हूँ।

व्रत-परम्परा भारतीय मानस की अति प्राचीन परम्परा है। मैंने इसका कोई नया आविष्कार नहीं किया है। मैंने सिर्फ उस प्राचीन परम्परा को जीवन-व्यापी बनाने की प्रेरणा मात्र दी है। यह मेरा सहज धर्म है। मुझे आशा है लोग जीवन शुद्धि में व्रतों को प्राथमिकता देंगे। जटिल स्थितियों के बावजूद इन्हें अपनायेंगे। असल में जटिल तथा विकट परिस्थितियों में ही व्रतों व संकल्पों की कसौटी होती है। कसौटी के मौकों को आमन्त्रित करना ही व्रतों की सफलता की ओर पग बढ़ाना है।

—आचार्य तुलसी

लक्ष्य और साधन

१—अणुव्रत आन्दोलन का लक्ष्य है —

(क) जाति, वर्ण देश और धर्म का भेदभाव न रखते हुए मनुष्य मात्र को आत्म-संयम की ओर प्रेरित करना।

(ख) अहिंसा और विश्व शांति की भावना का प्रसार करना।

२—इस लक्ष्य की पूर्ति के साधन-स्वरूप मनुष्य को अहिंसा, सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का व्रती बनाना।

३—अणुव्रतों का ग्रहण करने वाला 'अणुव्रती' कहलायेगा।

४—जीवन शुद्धि में विश्वास रखने वाले किसी भी धर्म, दल, जाति वर्ण और राष्ट्र के स्त्री पुरुष "अणुव्रती" हो सकेंगे।

५—अणुव्रती तीन श्रेणियों में विभक्त होंगे—

(क) अणुव्रत शील और चर्या तथा आत्म उपासना के व्रतों को स्वीकार करने वाला 'अणुव्रती'।

(ग) इनके साथ-साथ परिशिष्ट संख्या १ में बतलाये गये विशेष व्रतों का स्वीकार करने वाला 'विशिष्ट अणुव्रती'।

(ग) परिशिष्ट संख्या २ व ३ में बतलाये गये ग्यारह व्रतों या वर्गीय नियमों को स्वीकार करने वाला "प्रवेशक अणुव्रती" कहलायेगा।

६—व्रत भंग होने पर अणुव्रती को प्रायश्चित्त करना आवश्यक होगा।

७—व्रत पालन की दिशा में अणुव्रतियों का मार्ग-दर्शन प्रवर्तक करेंगे।

१

अहिंसा अणुव्रत

'अहिंसा सव्वभूयखेमकरी" (जैन)

(अहिंसा सब जीवो के लिए कल्याणकारी है ।)

"अहिंसा सव्वपाणान अग्गियो ति पवुच्चति" (बौद्ध)

(अहिंसा सब जीवो का आय—परम तत्त्व है ।)

मा हिंस्यात् सर्व भूतानि (वैदिक)

(किसी भी जीव की हिंसा मत करो ।)

अहिंसा मे मेरी श्रद्धा है । हिंसा को मै त्याज्य मानता हू । अहिंसा के क्रमिक विकास के लिए मै निम्न व्रतो को ग्रहण करता हू —

१—चलने फिरने वाले निरपराध प्राणी की सकल्पपूर्वक घात नही करूगा ।

२—आत्म-हत्या नही करूगा ।

३—हत्या व तोड फोड का उद्देश्य रखने वाले दल या सस्था का सदस्य नही बनूगा और न ऐसे कार्यों मे भाग लूगा ।

४—जातीयता के कारण किसी को अस्पृश्य या घृणित नही मानूगा ।

५—सब धर्मों के प्रति तितिक्षा के भाव रखूगा—भ्रान्ति नही फैलाऊगा व मिथ्या-आरोप नही लगाऊगा ।

६—किसी के साथ क्रूर-व्यवहार नही करूंगा।

(क) किसी कर्मचारी, नौकर या मजदूर से अति श्रम नही लूंगा।

(ख) अपने आश्रित प्राणी के खान पान व आजीविका का कलुष भाव से विच्छेद नहीं करूंगा।

(ग) पशुओ पर अति भार नही लादूंगा।

सत्य अणुव्रत

"मा मा सत्योक्ति परिपातु विश्वत' (वदिक)

(सत्य सम्पूर्णत मरी रक्षा करे ।)

यम्हि सच्च च धम्मा च सा मुचा' (बौद्ध)

(जिसमे धम और सत्य है, वह पवित्र है ।)

'सच्च लोगम्मि सारभूय (जन)

(सत्य लोक मे सारभूत है ।)

सत्य मे मेरी श्रद्धा है। असत्य को मै त्याज्य मानता हू । सत्य के क्रमिक विकास के लिए म निम्न व्रतों को ग्रहण करता हू —

१—क्रय विक्रय मे माप-तौल सख्या प्रकार आदि के विषय मे असत्य नही बोलू गा ।

२—जान बूझकर असत्य निर्णय नही दू गा ।

३—असत्य मामला नही करू गा और न असत्य साक्षी दू गा ।

४—सौंपी या धरी (धरोहर) वस्तु के लिए इन्कार नही करू गा ।

५—जालसाजी नही करू गा ।

(क) जाली हस्ताक्षर नही करू गा ।

(ख) झूठा खत या दस्तावेज नही लिखाऊ गा ।

(ग) जाली सिक्का या नोट नही बनाऊगा ।

६—वचनापूर्ण व्यवहार नही करू गा ।

(क) मिथ्या प्रमाण-पत्र नही दू गा ।

(ख) मिथ्या विज्ञापन नही करू गा ।

(ग) अवैध तरीका से परीक्षा मे उत्तीर्ण होन की चेष्टा नही करू गा '

(घ) अवैध तरीका से विद्यार्थिया क परीक्षा म उत्तीर्ण होने म सहायक नही बनू गा ।

७—स्वार्थ, लोभ या द्वेषवश भ्रमोत्पादक और मिथ्या सवाद, लेख व टिप्पणी प्रकाशित नही करू गा ।

अचौर्य अणुव्रत

"सोके अदिन्न नादियति तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं" (बौद्ध)

(जो अदत्त नहीं लेता उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।)

"सोमाविते मायमइ मदत्त" (जैन)

(चोरी वही करता है, जो लोभी है।)

अचौर्य मे मेरी श्रद्धा है। चोरी को मै त्याज्य मानता हूँ। अचौर्य के क्रमिक-विकास के लिये मै निम्न व्रतो को ग्रहण करता हूँ —

१—दूसरा की वस्तु को चोर-वृत्ति से नहीं लूगा।

२—जान-बूझकर चोरी की वस्तु को नहीं खरीदूँगा और न चोर को चोरी करने मे सहायता दूगा।

३—राज्य निषिद्ध वस्तु का व्यापार व आयात निर्यात नहीं करूंगा।

४—व्यापार मे अप्रामाणिकता नहीं बरतूगा।

(क) किसी चीज मे मिलावट नहीं करूंगा। जैसे—दूध मे पानी, घी मे वेजीटेबल, आटे मे [illegible], [illegible] आदि मे अन्य वस्तु का मिश्रण।

(ख) नक्ली का असली बताकर नहीं बेचूंगा। जैसे—
कलचर मोती को खरे मोती बताना, अशुद्ध घी को
शुद्ध घी बताना आदि।

(ग) एक प्रकार की वस्तु दिखाकर दूसरे प्रकार की वस्तु
नहीं दूंगा।

(घ) सौदे के बीच मे कुछ नहीं लाऊगा।

(ङ) तौल माप मे कमी बेसी नहीं करूंगा।

(च) अच्छे माल को बट्टा काटने की नीयत से खराब या
दागी नहीं ठहराऊँगा।

(छ) व्यापाराथ चोर-बाजार नहीं करूंगा।

५—किसी ट्रस्ट या सस्था का अधिकारी होकर उसकी धन-
सम्पत्ति का अपहरण या अपव्यय नहीं करूंगा।

६—बिना टिकिट रेलादि से यात्रा नहीं करूंगा।

४

ब्रह्मचर्य अणुव्रत

'तवसु वा उत्तम बम्भेर' (जन)

(ब्रह्मचय सब तपा म प्रधान है।)

"मा ते कामगुणे रमस्सु चित्त" (बौद्ध)

(तेरा चित्त काम भाग म रमण न करे।)

"ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत" (वदिक)

(ब्रह्मचर्य-तप के द्वारा दवा ने मृत्यु का जीत लिया।)

ब्रह्मचय मे मेरी श्रद्धा है। अब्रह्मचर्य को मैं त्याज्य मानता हू। ब्रह्मचय के क्रमिक विकास के लिए मैं निम्न व्रतों को ग्रहण करता हू —

१—कुमार अवस्था तक ब्रह्मचय का पालन करू गा।

२—४५ वर्ष की आयु के बाद विवाह नहीं करू गा।

३—महीने मे कमस कम २० दिन ब्रह्मचय का पालन करू गा।

४—किसी प्रकार का अप्राकृतिक मथुन नहीं करू गा।

५—वेश्या व पर स्त्री-गमन नहीं करू गा।

अपरिग्रह अणुव्रत

'मा गृध कस्य स्विद्धनम्'' (वदिक)

(किसी के धन पर मत ललचाओ)

''इच्छाहु आगाससमा अणतया' (जन)

(इच्छा आकाश के समान अनन्त है।)

''तण्हक्खयो सब्ब दुक्ख जिनाति (बौद्ध)

(जिसके तृष्णा क्षीण हो जाती है वह सब दु खो को जीत लेता है।)

अपरिग्रह मे मेरी श्रद्धा है। परिग्रह को म त्याज्य मानता हूँ अपरिग्रह के क्रमिक विकास के लिए मैं निम्न व्रतो को ग्रहण करता हूँ —

१—अपने मर्यादित परिमाण (   ) से अधिक परिग्रह नही रखूगा।

२—घूस नही लूगा।

३—मत (वोट) के लिए रुपया न लूगा और न दूगा।

४—लोभवश रोगी की चिकित्सा में अनुचित समय नही लगाऊगा।

५—सगाई विवाह के प्रसग मे किसी प्रकार के लेने का ठहराव नही करूगा।

६—दहेज आदि का प्रदर्शन नही करूगा और न प्रदर्शन में भाग लूगा।

शील और चर्या

अणुव्रती की जीवन-चर्या जीवन-शुद्धि की भावना के प्रति-कूल न हो इसलिए मैं निम्न व्रतों को ग्रहण करता हूँ —

१—आमिष भोजन नहीं करूंगा।

२—मद्यपान नहीं करूंगा।

३—भांग गांजा तम्बाकू जर्दा आदि का खाने-पीने व सूंघने में व्यवहार नहीं करूंगा।

४—खाने-पीने की वस्तुओं की दैनिक मर्यादा करूंगा। किसी भी दिन ३१ वस्तुओं से अधिक नहीं खाऊंगा।

५—वर्तमान वस्त्रों के सिवाय रेशमी आदि कृमि हिंसाजन्य वस्त्र न पहनूंगा और न ओढूंगा।

६—विशेष परिस्थिति और विदेशवास के अतिरिक्त, वर्तमान वस्त्रों के सिवाय स्वदेश से बाहर बने वस्त्र न पहनूंगा और न ओढूंगा।

७—असद्-आजीविका नहीं करूंगा।

(क) मद्य का व्यापार नहीं करूंगा।

(ख) जुआ और घुड़दौड़ नहीं खेलूंगा।

(ग) आमिष का व्यापार नहीं करूंगा।

८—मृतक के पीछे प्रथा रूप से नहीं रोऊंगा।

९—होली पर गन्दे पदार्थ नहीं डालूंगा और न अश्लील व भद्दा व्यवहार करूंगा।

आत्म-उपासना

१—प्रतिदिन आत्म चिन्तन करूंगा। ❀

२—प्रतिमास एक उपवास करूंगा। यदि यह सम्भव न हुआ तो दो एकाशन करूंगा।

३—पक्ष मे एक बार व्रतावलोकन और पाक्षिक भूलो व प्रगति का निरीक्षण करूंगा।

४—किसी के साथ अनुचित या कटु व्यवहार हो जाने पर १५ दिन की अवधि मे क्षमा-याचना कर लूंगा।

५—प्रतिवर्ष एक अहिंसा दिवस मनाऊंगा। उस दिन—

(क) उपवास रखूंगा।

(ख) ब्रह्मचर्य का पालन करूंगा।

(ग) असत्य व्यवहार नही करूंगा।

(घ) कटु वचन नही बोलूंगा।

(ङ) मनुष्य, पशु पक्षी आदि पर प्रहार नही करूंगा।

(च) मनुष्य व पशुओ पर सवारी नही करूंगा।

(छ) वर्ष भर मे हुई भूलो की आलोचना करूंगा।

(ज) किसी के साथ हुए कटु व्यवहार के लिए क्षमत-क्षामणा करूंगा।

❀ देखें-परिशिष्ट स० ४

परिशिष्ट—२

प्रवेशक अणुव्रती के व्रत

१—चलन फिरने वाले निरपराध प्राणी की संकल्पपूर्वक घात नहीं करूंगा।

२—मारी या धरी (बाधक) वस्तु के लिए इन्कार नहीं करूंगा।

३—दूसरों की वस्तु को चोर-वृत्ति से नहीं लूंगा।

४—किसी भी चीज में मिलावट कर या नकली को असली बताकर नहीं बेचूंगा।

५—तौल माप में कमी-बेसी नहीं करूंगा।

६—वेश्या व पर स्त्री-गमन नहीं करूंगा।

७—जुआ नहीं खेलूंगा।

८—सगाई व विवाह के प्रसंग में किसी प्रकार के लेने का ठहराव नहीं करूंगा।

९—मत (वोट) के लिए रुपया न लूंगा और न दूंगा।

१०—मद्यपान नहीं करूंगा।

११—भांग, गांजा, तम्बाकू आदि का खाने, पीने व सूंघने में व्यवहार नहीं करूंगा।

वर्गीय अणुव्रत नियम

विद्यार्थी के लिए

१—मैं परीक्षा मे अवधानिक तरीकों से उत्तीर्ण होने का प्रयत्न नही करूंगा।

२—मैं तोड फोडमूलक हिंसात्मक प्रवृत्तियो मे भाग नही लूंगा।

३—मैं विवाह प्रसग मे रुपये आदि लेने का ठहराव नही करूंगा।

४—मैं धूम्रपान व मद्यपान नही करूँगा।

५—मैं बिना टिकिट रेलादि से यात्रा नही करूंगा।

व्यापारी के लिए

१—मैं किसी भी चीज मे मिलावट नही करूंगा।

२—मैं नकली को असली बताकर नही बेचूंगा।

३—मैं एक प्रकार की वस्तु दिखाकर दूसरे प्रकार की वस्तु नही दूंगा।

४—मैं सौदे के बीच मे कुछ नही खाऊँगा।

५—मैं तौल माप मे कमी-बेसी नहीं करूंगा।

६—मैं अच्छे माल का बट्टा काटने की नीयत से खराब या दागी नही ठहराऊंगा।

७—मैं व्यापारार्थ चोर-बाजार नहीं करूंगा।

८—मैं राज्य निषिद्ध वस्तु का व्यापार व आयात निर्यात नहीं करूंगा।

राज्य कर्मचारी के लिए

१—मैं रिश्वत नहीं लूंगा।

२—मैं अपने प्राप्त अधिकारों से किसी के साथ अन्याय नहीं करूंगा।

३—मैं जनता और सरकार को धोखा नहीं दूंगा।

महिला के लिए

१—मैं दहेज का प्रदर्शन नहीं करूंगी।

२—मैं अपने लड़के-लड़की की शादी में रुपये आदि लेने का ठहराव नहीं करूंगी।

३—मैं आभूषण आदि के लिए पति को बाध्य नहीं करूंगी।

४—मैं सास श्वसुर आदि के साथ कटु व्यवहार हो जाने पर क्षमा-याचना करूंगी।

५—मैं अश्लील व भद्दे गीत नहीं गाऊंगी।

६—मैं मृतक के पीछे प्रथा रूप से नहीं रोऊंगी।

७—मैं बच्चों के लिए गाली व अभद्र शब्दों का प्रयोग नहीं करूंगी।

नोट—प्रवेशक अणुव्रती बनने के लिए महिलाओं को कम से कम पांच नियम अनिवार्यतः पालन करने होंगे।

चुनाव सम्बन्धी नियम

उम्मीदवार के लिए

१—मैं रुपये-पैसे व अन्य अवैध प्रलोभन देकर मत ग्रहण नहीं करूंगा।

२—मैं किसी दल या उम्मीदवार के प्रति मिथ्या [illegible] व भद्दा प्रचार नहीं करूंगा।

३—मैं धमकी व अन्य हिंसात्मक प्रभाव से [illegible] मतदान के लिए प्रभावित नहीं करूंगा।

४—मैं मत गणना में पर्चियां हेर-फेर करवाने [illegible] नहीं करूंगा।

५—मैं प्रतिपक्षी उम्मीदवार और उसके [illegible] प्रलोभन व भय आदि बताकर [illegible] पिलाकर तटस्थ करने का प्रयत्न नहीं करूंगा।

६—मैं दूसरे उम्मीदवार या दल से [illegible] उम्मीदवार नहीं बनूंगा।

७—मैं सेवा भाव से रहित केवल [illegible] उम्मीदवार नहीं बनूंगा।

८—मैं अनुचित व अवैध उपा[illegible] देने का प्रयत्न नहीं करूंगा।

९—मैं अपने अभिकर्ता (एजेण्ट) और कार्यकर्ताओं को इन व्रतों की [illegible] उल्लंघन करने की अनुमति नहीं दूंगा।

तो

गौर

पर

नाया

। नहीं

चुनाव अधिकारी के लिए

१—मैं अपने कर्तव्य-पालन में पक्षपात, प्रलोभन व अन्याय को प्रश्रय नहीं दूँगा।

सत्तारूढ उम्मीदवार के लिए

१—मैं राजकीय साधनों तथा अधिकारों का अवैध उपयोग नहीं करूँगा।

मतदाताओं के लिए

१—मैं रुपये-पैसे आदि लेकर या नेत का ठहराव कर मतदान नहीं करूँगा।

२—मैं किसी उम्मीदवार या दल को झूठा भरोसा नहीं दूँगा।

३—मैं जाली नाम से मतदान नहीं करूँगा।

समर्थक के लिए

१—मैं अपने पक्ष या विपक्ष के किसी उम्मीदवार का असत्य प्रचार नहीं करूँगा।

२—मैं अशान्तिक उपक्रमों से दूसरे की सभा को भंग करने का प्रयत्न नहीं करूँगा।

३—मैं उम्मीदवार-सम्बन्धी सारे नियमों का पालन करूँगा।

चुनाव अधिकारी के लिए

१—मैं अपने कर्तव्य-पालन मे पक्षपात, प्रलोभन व अन्याय को प्रश्रय नही दूँगा।

सत्तारूढ उम्मीदवार के लिए

१—मैं राजकीय साधनो तथा अधिकारो का अवैध उपयोग नही करूँगा।

मतदाताओ के लिए

१—मैं रुपये-पैसे आदि लेकर या लेने का ठहराव कर मतदान नही करूँगा।

२—मैं किसी उम्मीदवार या दल को झूठा भरोसा नही दूँगा।

३—मैं जाली नाम से मतदान नही करूँगा।

समर्थक के लिए

१—मैं अपने पक्ष या विपक्ष के किसी उम्मीदवार का असत्य प्रचार नही करूँगा।

२—मैं अनैतिक उपक्रमो से दूसरे की सभा को भंग करने का प्रयत्न नही करूँगा।

३—मैं उम्मीदवार-सम्बन्धी सारे नियमो का पालन करूँगा।

१२—किसी की निंदा तो नही की ?

१३—किसी के साथ अशिष्ट व्यवहार तो नहीं किया ?

१४—अविनय भूल या अपराध हो जाने पर क्षमा याचना की या नहीं ?

१५—जिह्वा की लालुपतावश अधिक तो नहीं खाया-पीया ?

१६—ताश, चोपड, कैरम आदि खेलो म समय को बर्बाद तो नही किया ?

१७—किन्ही अनैतिक या अवाछनीय कार्यो मे भाग तो नही लिया ?

१८—किसी व्यक्ति, जाति, दल, पक्ष या धर्म के प्रति भ्राति तो नही फैलाई ?

१९—अता की भावना को भुलाया तो नही ?

२०—दिन भर मे कौन से अनुचित, अप्रिय एव अवगुण पैदा करने वाले कार्य किये ?

निर्देश

व्रतों का पालन आन्तरिक भावना से होना चाहिए। अणुव्रती व्रतों के पालन में दृढ़ रहें। यहाँ कुछ निर्देश दिये जाते हैं जिन्हें व्रतों की शुद्धि के लिए निरन्तर ध्यान में रखना चाहिए —

अणुव्रती—

१—अनुशासन के प्रति निष्ठा व सद्भावना रखे।

२—व्रतों की भाषा तक सीमित न रहकर भावना से व्रतों का पालन करे।

३—पर दृष्टि से बचकर अवांछनीय कार्य न करे।

४—प्रत्येक कार्य करते हुए जागरूक रहे कि वह कोई अनुचित या निषिद्ध कार्य तो नहीं कर रहा है।

५—भूल को समझ लेने के बाद दुराग्रह न करे।

६—व्यक्तिगत स्वार्थ या द्वेषवश किसी का मर्म प्रगट न करे।

७—कोई अणुव्रती अन्य अणुव्रती को व्रत भंग करते देखे तो या तो उसे वह सचेत करे या प्रवर्तक को निवेदन करे पर दूसरों में प्रचार न करे।

८—उत्तरोत्तर व्रतों का विकास करे एवं दूसरों को व्रती बनने की प्रेरणा दे।

अणुव्रत प्रार्थना

(राग—उच्च हिमालय की चोटी से)

बड़े भाग्य हे भगिनी बन्धुओ जीवन सफल बनाए हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में अणुव्रती बन पाए हम।।
अपरिग्रह अस्तेय अहिंसा सच्चे सुख के साधन हैं।
सुखी देश हो सन्त प्रवचन संयम ही जिनका धन हैं।।
उसी दिशा में दृढ़ निष्ठा से क्या नहीं कदम बढ़ाए हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में अणुव्रती बन पाए हम।।१।।
रहें वणिक व्यापारी तो प्रामाणिकता रख पाएंगे।
राज्य कर्मचारी जो होंगे रिश्वत कभी न खाएंगे।।
दृढ़ आस्था आदर्श नागरिकता के नियम निभाए हम।
आत्म साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाये हम।।२।।
गृहणी हो गृहपति हो चाहे विद्यार्थी, अध्यापक हो।
वैद्य वकील शील हो सबमें, नैतिक निष्ठा व्यापक हो।।
धर्मशास्त्र के धार्मिकपन को आचरणों में लाए हम।
आत्म साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाए हम।।३।।
अच्छा हो अपने नियमों से, हम अपना संकोच करें।
नहीं दूसरे वध बन्धन से मानवता की शान हरें।।
यह विश्व मानव का निज गुण, इसका गौरव गाए हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाए हम।।४।।
आत्म-शुद्धि के आन्दोलन में तन मन अर्पण कर देंगे।
कभी जांच हो लिए व्रतों में आंच नहीं आने देंगे।।
भौतिकवादी प्रलोभनों में कभी न हृदय लुभाए हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में अणुव्रती बन पाए हम।।५।।
सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति में उसका असर राष्ट्र पर हो।
जाग उठे जन-जन का मानस, ऐसी जागृति घर घर हो।।
'तुलसी' सत्य, अहिंसा की जय विजय ध्वजा फहराए हम।
आत्म साधना के सत्पथ में अणुव्रती बन पाए हम।।६।।

अणुव्रत आन्दोलन

(प्रवेश पत्र)

श्रीयुत् मन्त्री
अ० भा० अणुव्रत समिति
१३३२ [illegible]
सब्जीमण्डी दिल्ली ।

प्रिय महाशय,

मैंने आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन के नियमों व व्रतों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है और गंभीरता पूर्वक विचार करने के बाद प्रवेशक / अणुव्रती / विशिष्ट / अणुव्रती बन रहा हूँ / बन रही हूँ। मैं इस आन्दोलन के व्रतों व नियमों का विधिवत् पालन करता रहूँगा / करती रहूँगी।

दिनांक   हस्ताक्षर

यहाँ से काटिए

पूरा नाम ____________
पिता या पति का नाम ____________
जाति ______ आयु ______ व्यवसाय ______
स्थाई पता ____________
____
वर्तमान पता ____________

हम अपने देश का मकान बनाना है। उसकी बुनियाद गहरी होनी चाहिए। बुनियाद यदि रेत की होगी तो जरा ही में बह जायगी, मकान भी बह जायगा। गहरी बुनियाद चरित्र की होती है। इन में जो काम हम करते हैं, वे बहुत लम्बे चौड़े हैं। इन सबकी बुनियाद चरित्र है। इस लिए बहुत अच्छा काम अणुव्रत आन्दोलन में हो रहा है। मैं मानता हूँ—इस काम की जितनी तरक्की हो, उतना ही अच्छा है। इसलिए मैं अणुव्रत आन्दोलन की पूरी तरक्की चाहता हूँ।

—जवाहरलाल नेहरू
(प्रधान मन्त्री)